विचार बिन्दु

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो, तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा

अपराधों में अब जो हो रहा है!

आदि काल से अब तक व्यक्तियों के समूह या समाज में अपराध सदैव से होते आए है। विश्व के सभी तीन बड़े धर्मों की पवित्र किताबों में विभिन्न प्रकार के अपराधों का उल्लेख आता है।

उदाहरण के लिए बाइबल में जो कमांडमेंट्स है उनमें कुछ काम नहीं करने के लिए कहा गया है जैसे– चोरी, हत्या, व्यभिचार नहीं करें अर्थात यह अपराध उस वक्त समाज में थे। मानव व पशु बलि, नर संहार, युद्ध, झूठी गवाही, किसी दूसरे की सम्पति को अनाधिकार कब्जाना आदि अपराध भी उल्लेखित है। इन सभी प्रकार के अपराधों को मानवता और ईश्वर के विरुद्ध अपराध माना है।

इस प्रकार इस्लामिक धर्म ग्रन्थों में भी कुछ कृत्यों को घृणित व अपराध माना है। मानव हत्या को अपराध माना है। चोरी को अपराध माना है। इसी प्रकार व्यभिचार, बलात्कार को निम्नतम श्रेणी का घृणित अपराध माना है। ईश्वरीय आज्ञाओं का उल्लंघन अपराध की श्रेणी में आता है। किसी की झूठी भर्तसना करना, लांछन लगाना आपराधिक श्रेणी का कृत्य माना गया है।

ग्रीक–यूनान व भारत की पौराणिक कथाओं में अनेक हत्या, परस्त्रीगमन, चोरी, जबरन या धोखे से योन सम्बन्धों जैसे अनेक अपराधों का उल्लेख मिलता है। ग्रीक पौराणिक कथाओं में तो यौन अपराधों का विस्तार से उल्लेख है।

काल गणना में भारतीय सत्ययुग, त्रेता युग, द्वापर व कलियुग की बातें करते है। सत्ययुग की बात तो मैं ज्यादा जनता नहीं किन्तु त्रेता, द्वापर और वर्तमान कलियुग के बारे में आम जन में प्रचलित कहानियों, तत समय का वर्णन करने वाले शास्त्रों में वे अधिकतर अपराध उल्लेखित हैं जो आज हम देखते–सुनते है। आज जैसे साइबर अपराधों का जिक्र पुराने शास्त्रों में नहीं है––शायद इसलिए कि उस समय इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, इनटरनेट नहीं था। वैसे सिद्ध व दुष्ट आत्माएं दूर से ही अच्छे–बुरे कर्म कर सकते थे, ऐसे उदाहरण खींचतान कर निकाले तो जा सकते हैं।

बड़े–बूढ़ों से बचपन से सुनते आए है कि ऐसा कोई अपराध नहीं जिसका महाभारत में उल्लेख न आया हो। अर्थात कोई भी काल रहा हो मानव समाज अपराध रहित कभी नहीं था। मानव समाज ही नहीं, चौपाए पशुओं, पक्षियों व जलीय प्राणियों के समूहों में हिंसक (उनकी शारीरिक क्षमताओं के अनुसार) अपराध होते है, होते आए हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे।

भूतकाल में जनसंख्या कम थी, तीव्रता से सूचनाओं को आग की तरह से प्रचारित– प्रसारित करने के साधन थे नहीं थे या अत्यंत सीमित थे। अखबारों के आने से पहले तो आपराधिक घटनाओं की जानकारी परिवार–पड़ोस–गांव–मोहल्लों तक सीमित रहती थी या कोई थोड़ा सक्षम व्यक्ति होता तो कोतवाली या किसी ओहदेदार व्यक्ति के पास फ़रियाद लेकर जाता। अखबारों के आने के बाद आपराधिक सूचनाओं, गतिविधियों का कुछ प्रचार–प्रसार होने लगा। ज्यों–ज्यों जनसंख्या में वृद्धि हुई, अपराधों की संख्या में भी वृद्धि होना स्वभाविक था। अपराधों की संख्या भी बढने लगी।

आज के युग के अखबार, इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी से बने एप्प्स, सोशल मीडिया, कोंटेंट्स को लाँचपैड देने वाले प्लेटफार्म्स व इनटरनेट 20–30 साल पहले नहीं थे इसलिए आपराधिक घटनाओं की जानकारी, समाज को व्यापक स्तर पर कम होती थी। वर्तमानं में प्रचार–प्रसार के लिए अखबार, टीवी, सोशल मीडिया जैसे साधनों में भी आशातीत वृद्धि हुई है। इसलिए अब आम अपराध जो सदियों से होते आए उनकी और नए–नए प्रकार के नए नए घृणित अपराधों की भी जानकारी आम जन तक पहुंच रही है। तकनीकी सुविधाओं के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पक्ष हैं।

अपराधों की वृद्धि के अन्य प्रमुख कारणों में है––(1) परिवारों व समाज में नैतिक दायित्वों व प्रभाव में कमी (2) प्रारंभिक शिक्षा छोटी उम्र से लड़कों व लड़कियों को नैतिक दायित्वों के निर्वहन के लिए प्रेरित कर सकती है व बुरे कर्मों के प्रति अनादर व उनसे दूर रहने की भावना विकसित करती है। प्रारंभिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में ऐसी प्रेरणा देने वाले लेख, कहानियां, नाटक, कविताए आदि का समावेश निरन्तर कम से कमतर होते गए हैं। आज से 20–30 साल पहले तक इस दृष्टि से अत्यंत सरल, प्रेरक कहानियां, लेख, नाटक आदि स्कूली पाठ्यक्रमों के आवश्यक भाग होती थी।

वर्तमान समय में महिलाओं और पुरुषों को काम धंदे, व्यवसाय, पढाई, नौकरी, मजदूरी के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जगहों पर जाना पड़ता है। नई जगह पर नए व्यक्तियों के साथ सम्पर्क होता है, साथ रहना पड़ता है। नई कामकाजी व दोस्ती के रिश्ते गढने पड़ते है। यहां पर परिवार, पड़ोस, रिश्तेदारियों के नैतिक अंकुश–दबाव से दूरी हो जाती है। ऐसे नए परिवेश–वातावरण में उच्छश्रृंखल व आपराधिक मनोवृतियों को बढ़ने का अवसर रहता है। ऐसे माहौल में कुछ पुरुष–महिलाएं आपराधिक रास्ते भी बिना हिचक के अख्तियार कर लेते हैं। इस से भी अपराध बढ़ते है।

औद्योगिक व सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति के बाद, अपराधों के सम्बंध में एक प्रभाव यह हुआ कि अपराधियों की धरपकड में आने वाली कठिनाइयां बढ़ी। अपराधी त्वरित गति से वारदातों के नए–नए तरीक़े सीखने लगे, वारदात की जगह से दूर दराज जाने लगे, कार्यस्थल, निवास बदलने लगे। सही है, अपराधियों की धरपकड करने वालों को भी अपराधियों की लोकेशन तलाशने, उन तक शीघ्र पहुंच आदि में कुछ सुविधाएं हुई हैं। अपराध बढ़ने और उनकी रोकधाम, दोनों की गति से काफी अंतर है। दौड़ में अपराध आगे हैं।

किन्तु अब तो ऐसे ऐसे वीडियो-ऑडियो की बाढ़ सी है जिनमें आवाज किसी की, शरीर का धड़ किसी ओर का और चेहरा किसी ओर का होता है। इनमें सच्ची के साथ, से निर्मित सरासर झूठी योन क्रियाएं भी दिखाई जा सकती है। इनसे बहुत बड़े व्यापक स्तर पर नैतिक पतन का घृणित प्रदूषण फैल रहा है।

वर्तमानं समय में तो ऐसे नए–नए प्रकार के घृणित अपराधों में बेहताशा वृद्धि हुई है जिनके बारे में 10–15 साल पूर्व तक, एक सामान्य व्यक्ति सोच भी नही सकता था। अपराधों के ऐसे ऐसे समाचार मीडिया में आते है जिनकी तो शायद ही किसी ने कल्पना की हो। निकटतम पारिवारिक रिश्तों तक कि मर्यादाओं को तारतार करने वाले 2, 4, 5 समाचार महीने–दो महीने में सुनने–पढ़ने को मिलना आम बात हो गई। सौतेले माँ व बाप की सौतेली संतानों के साथ माँ–बाप–भाई–बहनों के घृणित से घृणित रिश्ते सुनने में आते है। प्रेमी–प्रेमिकाओं के द्वारा पूर्व पार्टनर्स की व उनसे पैदा हुई संतानों की हत्या के मामले लगातार मीडिया में आते ही रहते है। धन, सम्पति के लिए निकटतम रिश्तों (माँ, बाप, बेटे–बेटियों द्वारा एक–दूसरे की हत्याएं) वालों की हत्याऐं तो आम सी बात हो गई।

बड़े पैमाने पर बढ़ते अपराधों के लिए, अपराधियों की मोबिलिटी, फोन सम्पर्क आदि से कहीं ज्यादा दूसरे व्यापक प्रभाव वाले कारण भी है, जिनमें प्रमुख है:–घटिया फिल्में–पिक्चर्स–विज्ञापन व सबसे ऊपर सूचना प्रौद्योगिकी व इंटरनेट क्रांति।

सत्य है कि फिल्में, पिक्चर्स, विज्ञापन विभिन्न प्रकार की बुराइयों के विरुद्ध जन मानस तैयार करने, सदविचारों, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध विचारों, नई विचारधाराओं, विज्ञानिक सोच आदि की अभिव्यक्ति व उनके प्रचार–प्रसार के सशक्त साधन भी रहे है और है भी।

किंतु जब दूषित मानसिकता वाले निर्माताओं का एकमात्र उद्देश्य शीघ्रातिशीघ्र व अधिकाधिक धनार्जन ही हो जाए या फिर आपराधिक मनोवृती वालों का इनसे धनार्जन का या समाज में अपराध फैलाना ही प्रमुखतम धेय हो जाए तो फिर तो समाज का भगवान ही मालिक है।

सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति व अब अर्टिफिसीयल इनटेलिजेंस (AI) (कृत्रिम बुद्धिमता) ने आदमी को कैसा भी अच्छा–बुरा कॉन्टेंट तैयार करने का भष्मासुर वाला सा हथियार दे दिया और इनटरनेट नें ऐसे कोंटेंट्स को सेकंडों में पूरे संसार नें फैलाने की ताकत दे दी।

पहले ऐसी पिक्चर्स जिन में यौन सम्बंधित दृश्य होते थे उन्हें कम उम्र के बालकों, बालिकाओं को दिखाने की मनाही होती थी। इसका तोड़ निकाला ऐसे दृश्यों के वीडियो बनाकर उन्हें चोरी–छिपे प्रसारित करने और उनसे धन कमाना। एक समय ऐसा था जब ऐसे वीडियोज का फिल्मों के समानांतर साम्राज्य सा हो गया था। फ़िल्म प्रोड्यूसर्स नें इसका जबरदस्त विरोध भी किया क्योंकि उनकी कमाई पर असर पड़ने लगा। किन्तु यह सब तो भूतकाल की बातें हो गई।

अब तो, जानकार लोग बताते रहते हैं कि अकल्पनिय योन क्रियाओं, अपराधों के सही के या कृत्रिम बुद्धिमता (AI) से बनाए वीडियोज, ओडियोज की बाढ़ सी आ रही हैं। पहले पहल तो ऐसे वीडियोज–ओडियोज का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिद्वंदियों, उत्पादों आदि की साख खराब करने के लिए हुआ। इनसे भी समाज में अनैतक प्रदूषण फैला किन्तु बहुत बड़े व्यापक स्तर पर वर्तमान जैसे नैतिक पतन करने वाला घृणित प्रदूषण नहीं फैला।

किन्तु अब तो ऐसे ऐसे वीडियो–ऑडियो की बाढ़ सी है जिनमें आवाज किसी की, शरीर का धड़ किसी ओर का और चेहरा किसी ओर का होता है। इनमें सच्ची के साथ, से निर्मित सरासर झूठी योन क्रियाएं भी दिखाई जा सकती है। इनसे बहुत बड़े व्यापक स्तर पर नैतिक पतन का घृणित प्रदूषण फैल रहा है।

जब ऐसे अश्लील वीडियोज की पहुंच कम उम्र वाले लड़के–लड़कियों तक हो जाए और उन्हें अच्छी तरह से मार्गदर्शन करने वाले साहित्य की शिक्षण पाठ्क्रमों में भारी कमी आ जाए, परिवार–पड़ोस–रिश्ते नातों का व समाज के नैतिक अंकुश में भारी कमी आ जाए तो बाल बुद्धि को ऐसे वीडियोज को देखने से और वैसा कुछ करने से कोन रोकेगा–टोकेगा?

तो समाधान क्या? समाधान के लिए परिवार, पड़ोस, रिश्तेदारों, समाज और तथाकथित सांस्कृतिक संगठनों को तो निश्चित: ही अपने दायित्वों का निर्वहन के लिए आगे आना ही पड़ेगा। दो ओर पक्ष है जिसका दायित्व सर्वाधिक है। एक है केंद्र सरकार और दूसरा है सोशल मीडिया व दूसरे कोंटेंट्स के प्रसारण के लिए बने विभिन्न प्लेटफार्म्स। सरकार अमर्यादित–अश्लीलता वाले विज्ञापनों–पिक्चर्स–वीडियोज व अश्लीलता वाले कोंटेंट्स के सर्जकों पर और उसके प्रसारण करने वाले प्लेटफार्मस के लिए सख्त कानून के जरिये और उसके 100 प्रतिशत क्रियान्वयन के जरिये लगाम लगाए।

सबसे पहले तो संसद को अश्लीलता शब्द को व्यापक सन्दर्भ में परिभाषित करना पड़ेगा। इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए, सोशल मीडिया व दूसरे कोंटेंट्स को लाँचपैड देने वाले पलेटफॉर्मस के दायित्व तय करने होंगे। दायित्वों का उल्लंघन करने वालों को दंडित करने के सख्त प्रावधान बनाने होंगे। उनका त्वरित प्रभावी क्रियान्वयन भी सरकारों को सुनिश्चित करना होगा। प्लेटफार्म्स प्रोवाइडर्स को भी स्वयं से केवल व केवल उचित, सामाजिक दृष्टि से मर्यादित कोनेंट्स को ही जगह देने के लिए मानदंड तय करने चाहिए। इतना विकास तो हो ही चुका है जिससे अमर्यादित शब्दों–दृश्यों को स्वत: ही ब्लॉक किया जा सकता है।

स्मरण रहे––विज्ञान की कोई भी खोज, अविष्कार मानवता के लिए वरदान और अभिशाप दोनों है। यह मनुष्यों पर निर्भर करता है वे उसका उपयोग कैसे करते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

यह जनता का बजट है जो विकसित राजस्थान के संकल्प को आगे ले जाएगा

बाल मुकुन्द ओझा

राजस्थान की भाजपा सरकार ने विधान सभा में अपने कार्यकाल का दूसरा सालाना बजट प्रस्तुत करते हुए राहत का पिटारा खोल दिया है। वित्त मंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को वर्ष 2025–2026 का बजट प्रस्तुत किया। वित्तमंत्री ने कहा भाजपा सरकार जनविश्वास पर खरा उतरते हुए सब के सहयोग से खुशहाल और विकसित राजस्थान बनाने का हर संभव प्रयास करेगी। साथ ही विकास, निवेश और उपभोग को कई गुणा बढ़ाएगा। दिया कुमारी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमने प्रथम वर्ष में ही नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। सरकार ने जनता के विश्वास को सही प्रमाणित किया है।

बजट में समाज के सभी वर्गों के कल्याण की घोषणा करते हुए कहा गया है कि हमारी सरकार का यह दृढ़ विश्वास है कि समाज के हर तबके खासतौर पर निर्धन, असहाय और पिछड़े वर्ग को सशक्त बनाकर ही हम अपने प्रदेश को गरीबी और बेरोजगारी के अभिशाप से मुक्त कर सकते है। वित्त मंत्री ने आम आदमी के कल्याण की विभिन्न घोषणाओं का पिटारा खोलते हुए अपनी सरकार का मंतव्य भी स्पष्ट कर दिया। यह बजट युवाओं, गरीबों, किसानों, महिलाओं और सभी क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने वाला है। बजट में समाज के सभी वर्गों को खुश करने का प्रयास किया है।

यह विकसित राजस्थान के सपने को साकार करने वाला एक बेहतरीन बजट है। सत्ता पक्ष ने बजट का स्वागत करते हुए जहाँ गावं, गरीब और किसान के लिए समर्पित बजट बताया है तो विपक्ष ने इसे निराशाजनक घोषित किया है। मुख्य मंत्री भजनलाल ने पत्रकारों से कहा, यह सर्वजनहिताय का बजट हैं। राजस्थान का 350 बिलियन अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य हैं। इस बजट में बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान रखा गया हैं। उन्होंने कहा कि संकल्प पत्र में किये गए वायदे के अनुसार ये बजट पेश किया है। हम राजस्थान की जनता के बीच में संकल्प पत्र लेकर गए थे। हमारी सरकार ने एक वर्ष में 50 प्रतिशत संकल्प पत्र के वायदों को पूरा किया हैं।

बजट के विश्लेषण से लगता है इसमें समाज के सभी वर्गों को कमोवेश राहत प्रदान की गई है। बजट खासतौर पर युवाओं, किसानों, महिलाओं और गांव गरीब पर केंद्रित है। यह बजट बचत, निवेश और उपभोग को बढ़ाएगा और साथ ही विकास को भी तेज़ी से बढ़ाएगा। बजट में आम तौर पर फोकस इस बात पर रहता है कि सरकार का खजाना कैसे भरे, लेकिन ये बजट उससे बिल्कुल उल्टा है। यह बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास में भागीदार कैसे बने, इसकी बहुत मजबूत नींव रखता है। भजनलाल सरकार द्वारा कई लोक लुभावने विषयों को समेटने का इस बजट में प्रयास किया गया है। वित्त मंत्री दिया कुमारी ने हर सेक्टर को छूने का प्रयास किया है। बजट में सभी वर्गों के लिए कुछ न कुछ प्रावधान किए गए हैं। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पेयजल, बिजली, सड़क, महिला एवं बाल विकास, सिंचाई, सहकारिता, पशुपालन आदि पर विशेष ध्यान दिया गया है। बजट में सवा लाख युवाओं को सरकारी नौकरी और डेढ़ लाख को निजी क्षेत्र में रोजगार सुलभ कराने की घोषणा से युवा वर्ग को सम्बल मिलेगा।

150 यूनिट फ्री बिजली के साथ 5 लाख नए घरेलू बिजली कनेक्शन और 5 हजार नए कृषि कनेक्शन भी देगी। मंदिरों में भोग की राशि 3 हज़ार और पुजारियों का मानदेय 7 हज़ार होगा। पत्नी के साथ खरीदी गई 50 लाख तक की प्रॉपर्टी सस्ती होगी। सरकार ने बजट में स्टांप ड्यूटी में आधा प्रतिशत छूट की घोषणा की है। खाद्य सुरक्षा योजना में दस लाख नए परिवारों को जोड़ने का ऐलान किया गया है। राजधानी में बीआरटीएस सिस्टम हटाने के साथ मेट्रो के नए फेज का भी ऐलान किया गया है। 40 लाख तक के टर्न ओवर वाले व्यापारियो को रजिस्ट्रेशन से छूट, सेल्फ असेसमेंट की व्यवस्था लागू होगी। पीएम किसान सम्मान निधि बढ़ाकर 9000 रुपए की गई है। गेहूं के एमएसपी पर प्रति क्विंटल 150 रुपए बोनस की घोषणा की है। राजीविका मिशन के तहत 20 लाख महिलाओं को लखपति दीदी की श्रेणी में लाया जाएगा। सामाजिक सुरक्षा के तहत कमजोर आय वाले बुजर्ग, विधवा की पेंशन 1250 रुपए की गई है। फिट इंडिया की तर्ज पर फिट राजस्थान अभियान शुरू होगा। प्रदेश में इस समय 5 हजार से ज्यादा स्टार्टअप हैं।

इन स्टार्टअप से 36 हजार युवा जुड़ रहे हैं। सरकार के मुताबिक जन घोषणा पत्र की 58 प्रतिशत और बजट घोषणा की 73 प्रतिशत घोषणा पूरी हो गई है। अगले साल 1500 स्टार्ट अप बनाएंगे, 750 से ज्यादा स्टार्टअप को फंड उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही 50 हजार युवाओं को कौशल प्रशिक्षण दिया जाएगा। पर्यटन विकास के लिए 975 करोड़ के काम होंगे धार्मिक पर्यटन स्थलों का विकास होगा। शहरों में दो लाख नए पट्टे दिए जाएंगे। रोडवेज को 500 नई बसें मिलेंगी। जयपुर मेट्रो के सेकेंड फेज के तहत 12 हजार करोड़ की लागत से सीतापुरा से विद्याधर नगर तक काम किया जाएगा। जगतपुरा, वैशाली क्षेत्र में मेट्रो के लिए सर्वे किया जाएगा।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

उड़ीसा के कलाकारों ने भारतीय लोक कला की छटा बिखेरी

जालोर महोत्सव के तहत उड़ीसा के लोक कलाकारों ने नृत्य की प्रस्तुति दी।

जालोर, (कासं)। जालोर महोत्सव 2025 के तहत मंगलवार रात्रि को नटराज मंच पर उड़ीसा के लोक कलाकारों ने जगन्नाथपुरी यात्रा सहित कई लोक संस्कृति से ओतप्रोत नृत्य की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

- **जालोर महोत्सव 2025 के तहत जगन्नाथपुरी रथयात्रा का चित्रण किया**

जालोर महोत्सव में मंगलवार को रात्रि को नटराज मंच पर उड़ीसा के संबलपुरी लोक नृत्य कलाकारों ने भगवान जागनाथपुरी की रथ यात्रा, गणपति बप्पा, सम्बलपुरी लोक नृत्य, राधा कृष्ण के लोक नृत्य सहित विभिन्न प्रकार के नृत्य की प्रस्तुति दी। एकेडमी के निदेशक रश्मि रंजन के निर्देशन में लोक कलाकार दल ने पांच वाध ढोलक, निसान, तासा, झांझ, मुहूरी आदि का इस्तेमाल करते हुए मायलाजड नृत्य, नचनिया, भजनिया, करमा नृत्य, जांहिफूल नृत्य, ढाप नृत्य व मालेश्री आदि लोक नृत्य की अनुठी प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। जालोर महोत्सव में उड़ीसा से आये कलाकारों ने बताया कि जगन्नाथ रथ यात्रा का मंचन करने के लिए कलाकार ने व्रत उपवास रखकर 45 दिनों की साधना करके जगनाथपुरी के दर्शन कर वहां से प्रसाद लेकर आये हैं, जिसे उपस्थिति दर्शको को वितरण किया गया। नटराज मंच पर लोक नृत्य की विभिन्न कलाओं को देखकर उपस्थित जनसमूह ने तालियों से कलाकारों का हौसला अफजाई की।

इस दौरान जालोर विकास समिति के सचिव मोहन पाराशर, कानाराम परमार, नारायणलाल भट्ट, हितेश प्रजापत, नितिन सोलंकी, समन्वयक रतन सुथार, नाथू सोलंकी सहित काफी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

शहीद हवलदार संजय शर्मा का शहादत दिवस मनाया

शहीद की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के ककराय गांव में बुधवार को शहीद हवलदार संजय शर्मा का शहादत दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल सुरेश जांगिड़, विशिष्ट अतिथि शेर सिंह कृष्णिया थे, जबकि अध्यक्षता शहीद पिता रामभरोस ने की।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम अतिथियों ने शहीद की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्य अतिथि कर्नल सुरेश जांगिड़ ने कहा कि राजस्थान की वीर धरा की परंपरा है कि देश की सुरक्षा करते हुए न्योछावर हो जाना। वीर शहीदों की बदौलत ही आज हम सीमाओं की तरफ से सुरक्षित हैं। शहीद सभी के लिए सम्माननीय है। झुंझुनूं जिले को देश में सर्वाधिक सैनिक देने का गौरव प्राप्त है। यहां के युवाओं को बचपन से ही देश सेवा के प्रेरित किया जाता है जो सेना में भर्ती होकर अपने देश की सरहद पर बहादुरी का परिचय देते है। जिले के गांवों में सड़क किनारे लगी शहीदों की प्रतिमाएं युवाओं को आगे बढ़कर देश सेवा के लिए प्रेरित करती है। ऐसे में युवाओं को भी शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ाना चाहिए। शहीद संजय शर्मा 2013 में आसाम राइफल में भर्ती हुए थे। वहीं 2022 में मणीपुर में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए थे।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने शहीद वीरांगना मिकी देवी, पिता रामभरोस का माल्यार्पण कर सम्मान किया। इस मौके पर पूर्व सरपंच ओमप्रकाश, देवदत्त जाँगिड़, रामचंद्र गुर्जर, अंजनी कुमार, अनुराग शर्मा, सूरज मीणा, दिलीप मीणा, मनोज शर्मा, जितेंद्र, विवेक, नवीन, कैलाश जांगिड़, नवीन, राजकुमार मीणा, आदेश, जतिन सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

रीट पात्रता परीक्षा का सर्टिफिकेट आजीवन मान्य, सीईटी सर्टिफिकेट की अवधि सिर्फ एक साल

बीकानेर, (निसं)। राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड की ओर से विभिन्न विभागों की भर्ती प्रक्रिया से पहले स्क्रीनिंग के लिए आयोजित की गई राजस्थान समान पात्रता परीक्षा सीईटी–2024 सीनियर सेकेंडरी लेवल एग्जाम का रिजल्ट घोषित कर दिया है। सीईटी एसएस पात्रता परीक्षा में लगभग 59.5 प्रतिशत अभ्यर्थी निर्धारित अंक अर्जित कर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा में शामिल होने के लिए एलिजिबल हुए हैं। जबकि 40.5 प्रतिशत अभ्यर्थी पात्रता परीक्षा में न्यूनतम 40 प्रतिशतअंक हासिल नहीं कर पाए हैं। ऐसे में इन अभ्यर्थियों को अब अगले साल होने वाली पात्रता परीक्षा के लिए इंतजार करना होगा। वहीं पात्रता हासिल करने वाले 9.17 लाख अभ्यर्थियों का सीईटी एसएस सर्टिफिकेट एक साल के लिए मान्य होगा। जहां रीट पात्रता परीक्षा सर्टिफिकेट आजीवन मान्य है। वहीं सीईटी सर्टिफिकेट की अवधि केवल एक साल ही है। बोर्ड की ओर से 900 सवालों से से छह सवालों को डिलीट किया गया है।

राजस्थान बेरोजगार यूनियन के प्रदेश प्रवक्ता अशोक चौधरी ने कहा कि राज्य सरकार को इसी साल से पात्रता परीक्षा के सर्टिफिकेट की अवधि को 1 साल से बढ़ते हुए 3 साल करना चाहिए। सीईटी सीनियर सेकेंडरी एग्जाम में पात्र अभ्यर्थियों को राज. वन अधीनस्थ सेवा, राज. पुलिस अधीनस्थ सेवा, राज. पंचायती राज, राज राज्य कृषि विपणन बोर्ड, राजस्थान कृषि उपज मंडी, राजस्थान अल्प संख्यक मामलात अधीनस्थ सेवा, राजस्थान लोक सेवा आयोग कार्यालय लिपिकीय सेवा, राजस्थान सचिवालय लिपिकीय सेवा, राजस्थान आबकारी अधीनस्थ सेवा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान और राजस्थान अधीनस्थ कार्यालय लिपिकीय सेवा विभागों में भर्ती के लिए पात्रता मिल पाएगी। सीईटी 2024 सीनियर सैकंडरी एग्जाम में भी नियमों की शिथिलता दी गई थी। जिसके कारण से सीईटी में बिना नेगेटिव मार्किंग के केवल 40 प्रतिशत न्यूनतम उत्तीर्णांक प्राप्त करना आसान रहा। सीईटी में 18 लाख 63 हजार 156 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। जिसमें से 15 लाख 41 हजार 601 अभ्यथिर्यों ने एग्जाम दिया। इस एग्जाम के 2139 पेज के रिजल्ट में अब 9 लाख 17 हजार 681 अभ्यर्थी पात्र हो गए हैं, यानि कि पात्रता प्रतिशत 59.5 प्रतिशत रहा है। सीईटी की पात्रता अवधि केवल एक वर्ष के लिए रखी गई है। सरकार की ओर से पिछले दिनों पात्रता अवधि को एक वर्ष से बढाकर तीन वर्ष कर दिया था, लेकिन बाद में इसे एक वर्ष कर दिया गया था। राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड ने यह भी स्पष्ट किया है कि भविष्य में होने वाली सीईटी की पात्रता अवधि तीन वर्ष रहेगी।

राशिफल गुरूवार 20 फरवरी, 2025

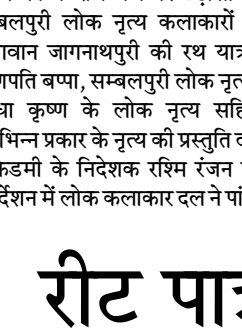

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, विशाखा नक्षत्र दिन 1:30 तक, ध्रुव योग दिन 11:34 तक, बव करण प्रात: 9:59 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–मिथुन, बुध–कुम्भ, गुरू–वृष, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 1:30 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 1:30 से आरम्भ होगा। आज श्रीनाथ जी पाटोत्सव, कालाष्टमी है। आज से राष्ट्रीय फाल्गुन मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:28 तक, चर 11:16 से 12:41 तक, लाभ–अमृत 12:41 से 3:29 तक, शुभ 4:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:03, सूर्यास्त 6:18

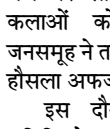

मेष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

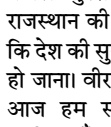

सिंह

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

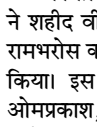

धनु

अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

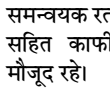

वृष

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

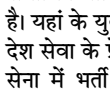

कन्या

आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

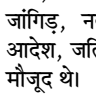

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

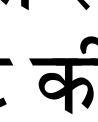

मिथुन

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आज परिवार में शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

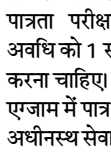

कर्क

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

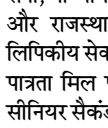

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

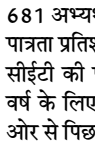

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।